चतुर्थ अध्याय

'शम्बूक'

कथा पुरानी व्यथा नई।

शम्बूक एक खंडकाव्य --

भारतीय मनीषी आचार्यों ने श्राव्यकाव्य के अंतर्गत प्रबंध एवं मुक्तक - दो भेदों को माना है,जिसमें प्रबंध-काव्य के अंतर्गत महाकाव्य तथा खंडकाव्य का स्थान है । महाकाव्य में व्यक्ति और समाज के समग्र जीवन की अभिव्यक्ति की जाती है और खंडकाव्य में समाज या किसी व्यक्ति के जीवन के किसी एक ही प्रसंग ,रुप या पक्ष का चित्रण किया जाता है । खंडकाव्य प्रबंधकाव्य का एक भेद है, इसीलिए उसमें महाकाव्य की तरह एक कथा होती है और उस कथा में कथा संगठन रहता है, किंतु महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित रहता है ।

संस्कृत काव्यशास्त्र में खंडकाव्य को अधिक महत्व न देकर महाकाव्य का ही विशद विवेचन किया है। इसलिए संस्कृत में खंडकाव्य संबंधी विवेचन बहुत कम मिलता है । आचार्य विश्वनाथ द्वारा निर्धारित खंडकाव्य की परिभाषा भारतीय काव्यशास्त्र में 'खंडकाव्य' की सर्वप्रथम परिभाषा है । आपने महाकाव्य के लक्षणों का उल्लेख करने के उपरांत खंडकाव्य के बारे में यों बताया है --

भाषा विभाषा नियमात्काव्यं सर्गसमुत्थितम् ।
एकार्थ प्रवणैःपद्यैः सन्धि सामग्यवर्जितम्
खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च । "[1]

अर्थात भाषा या उपभाषा में सर्गबद्ध तथा एक कथा का निरुपण करनेवाला पद्य ग्रंथ, जिसमें समस्त संधियाँ न हो, काव्य कहा जाता है और काव्य के एक देश (अंश) का अनुसरण करने वाला खंडकाव्य है ।

आपने फिर बताया है कि -

"तत्तु घटना प्राधान्यात् खण्डकाव्यमितिस्मृतम् ।"[2]

मतलब यह कि खंडकाव्य वह है जो किसी घटना - विशेष को लेकर रचा गया हो ।

इन लक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि खंडकाव्य में एक ही घटना की प्रधानता रहती है और उसमें मानव जीवन के एक ही अंग का चित्रण किया जाता है । हिंदी के विद्वानों ने भी खंडकाव्य संबंधी अपनी मान्यताएँ व्यक्त की हैं --

"प्रबंध काव्य का दूसरा भेद खंडकाव्य या खंडप्रबंध है । -- प्राय :जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक उद्घाटन होता है और अन्य प्रसंग सक्षेप में रहते हैं । -----इसमें भी कथासंगठन आवश्यक है, सर्गबद्धता नहीं । इसमें भी वस्तुवर्णन एवं चरित्र का चित्रण किया जाता है, पर कथा विस्तृत नहीं होती । "[3]

"खंडकाव्य में एक ही घटना को मुख्यता दी जाकर उसमें जीवन के किसी एक पहलू की झाँकी सी - मिल जाती है । "[4]

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि हिंदी के विद्वानों ने खंडकाव्य की कोई मौलिक परिभाषा नहीं की है । केवल वे आचार्य विश्वनाथ की परिभाषा के व्याख्याता ही हुए हैं।

'शम्बूक' डॉ. जगदीश गुप्त का एक खंडकाव्य है । प्रस्तुत काव्य की रचना रामायण की 'शम्बूक-वध' मात्र एक घटना को लेकर की है । यह एक ही पौराणिक घटना लेकर उसके आधार पर कवि ने आधुनिक समस्याओं का चित्रण किया है । इस प्रकार स्वरुप की दृष्टि से 'शम्बूक ' एक सफल खंडकाव्य है ।

खंडकाव्य के तत्व -

खंडकाव्य महाकाव्य का लघु रुप है । इसलिए महाकाव्य के तत्वों का समावेश खंडकाव्य में हो सकता है । प्राचीन तथा आधुनिक काव्य के परिवेश में बदल हो जाने के कारण भाव तथा रुप की दृष्टि से खंडकाव्य के तत्वों में भी बदल हो जाना स्वाभाविक है । आज सामान्यतः सफल खंडकाव्य के लिए निम्नलिखित तत्वों का होना आवश्यक माना जाता है -

1. खंडकाव्य का कथानक संक्षिप्त किंतु संगठित और सुव्यवस्थित होता है । महाकाव्य के समान अनेक छोटी छोटी अंतरकथाएँ या षड्ऋतु-वर्णन आदि के लिए इसमें स्थान नहीं होता ।
2. इस काव्य में जीवन के किसी मार्मिक पक्ष का चित्रण सीमित दृष्टिकोण से किया जाता है।
3. खंडकाव्य अपने आपमें संपूर्ण होता है तथा उसमें प्रभवान्विति होना आवाश्यक है ।
4. इस प्रकार के काव्य में वस्तुवर्णन की अपेक्षा चरित्रों के उद्घाटन पर अधिक बल दिया जाता है ।

5. इस काव्य में सात से कम सर्ग तथा उसका पूर्वापार संबंध होना आवश्यक है ।

6. इस काव्य में छंदोबद्धता की आवश्यकता नहीं है,मुक्त छंद में भी काव्य रचना हो सकती है ।

7. खंडकाव्य के कथानक में अधिक प्रवाह होता है ।

8. काव्य में चरित्र-चित्रण तथा वातावरण की सफल योजना आवश्यक है।

9. खंडकाव्य का एक सुनिश्चित उद्देश्य होता है ।

'शम्बूक ' खंडकाव्य की संक्षेप में कथावस्तु -

'शम्बूक' एक सफल खंडकाव्य है । यह काव्य रचनाकार डॉ. जगदीश गुप्त के मानस में संचित संपूर्ण कलात्मक संप्रेरणाओं का सुपरिणाम है । यह 'नाटयकाव्य शैली' में रचित काव्य कृति है । रामकथा के माध्यम से आधुनिक समस्याओं का समाधान खोजने वाले प्रबंध-काव्य की परंपरा में 'शम्बूक' एक महत्वपूर्ण कृति है । कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से नये प्रसंगों को नई अर्थवत्ता के साथ नये रुप में प्रस्तुत किया है । इस काव्य की कथावस्तु निम्नलिखित आठ भागों में विभक्त है --

1 राजद्वार ।

2 पुष्पक यान ।

3 वनदेवता ।

4 दंडकारण्य ।

5 प्रतिपक्ष ।

6 छिन्न शीश ।

7 आत्मकथ्य ।

8 रक्त- तिलक ।

इन भागों को स्वयं कवि अंश कहना अधिक उचित समझता है । कविकथन में कवि ने स्पष्ट कहा है -----" 'शम्बूक' को मैं 'खंडकाव्य' की जगह 'लघुकाव्य' कहना अधिक पसंद करुँगा क्योंकि खंडकाव्य शब्द मेरे मन को किसी टूटी हुई वस्तु का बोध कराता है।

इसी तरह 'राजद्वार'आदि को मैं 'सर्ग' की जगह 'अंश' कहना अधिक संगत समझता हूँ। अंश में अंशों के साथ एकता का भाव अधिक दिखायी देता है। "5

इस प्रकार प्रस्तुत लघुकाव्य की कथावस्तु कवि ने आठ अंशों में विभाजित की है । समग्र कथा विधान में 'प्रतिपक्ष' एवं 'रक्ततिलक' काव्य का प्रतिपाद्य है । भारतीय गणतंत्रात्मक व्यवस्था में कुचली जा रही निम्न वर्ग की आवाज को स्वर देनेवाले ये कथांश अत्यंत प्रभावशाली बन पड़ें हैं। प्रस्तुत खंडकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में निम्नप्रकार है -

1. राजद्वार --

प्रस्तुत काव्य का पहला अंश है -- 'राजद्वार'। अंश के आरंभमें कवि ने राम के वैभवपूर्ण दरबार का वर्णन किया है । राम अयोध्या का शक्तिशाली लोकरक्षक सम्राट है । एक बार राम-राज्य में ब्राह्मण का पुत्र साँप के काटने से मर जाता है । गरीब ब्राह्मण लोकरक्षक राम के दरबार में आकर क्रंदन करता है । उसके करुण चित्कार से दरबार में कोलाहल मच जाता है । यह प्रसंग राम-राज्य में प्रवाद का विषय बन जाता है । राज वैद्य के सारे उपचार व्यर्थ जाते हैं ।

तब राम विप्र के दुख से चिंतित होकर गुरु वशिष्ठ को बुलवाते हैं । मार्ग में मुनि नारद की वशिष्ठ से भेंट हुई और नारद ने बताया कि दंडकवनमें एक शूद्र स्वर्ग के सुख को लूटने की आशा से तप कर रहा है । यह शूद्र - तपस्या राम के राज्य में हो रही है और विप्र-सुत की मृत्यु से इसका संबंध है । अतः यह राजा का पाप है, जिसके कारण विप्र-पुत्र की अकाल मृत्यु हुई है । उसके साथ ही अकाल,सूखा आदि के रुप में दैवी आपदायें आ रही हैं । अतः शूद्र- मुनि का वध होना आवश्यक है ----

"विपिन जाकर
शूद्र- मुनि- वध
जब करेंगे राम,
होगा तभी जीवित
सहज परिणाम "6

गुरु वशिष्ठ ने नारद के इस मंत्र को तुरंत राम के सम्मुख रखा । राम ने गुरु की मंत्रणा को तत्क्षण स्वीकार कर शूद्र-तपस्वी शम्बूक का वध करने का निश्चय किया ।

2.पुष्पक यान --

'पुष्पक यान ' नामक अंश प्रतिकात्मक है । इसमें राम पुष्पक यान में बैठकर दंडकवन की ओर निकल पडता है । जाते समय नीचे की प्रकृति को देखकर राम के मन में पुरानी स्मृतियाँ जागृत होती हैं। त्रिवेणी संगम प्रदेश को देखकर राम के मन में सीता की याद आती है । सीता परित्याग के समय की याद आते ही राम की आँखे भीग जाती हैं । उसके बाद यान उत्तर दिशा की ओर जाता है । वहाँ राम अपार प्रकृति सौंदर्य को निहारता है । फिर वहाँ उसका यान पूर्व दिशा की ओर चल पडता है । उसी समय राम को स्मरण हुआ कि वह अपने पिता दशरथ के आदेश पालन के लिए विश्वामित्र के यहाँ गया था और उसने रास्ते में अहिल्या का उद्धार भी किया था । राम में उसी समय पश्चाताप की भावना जाग उठती है और वह कहता है --

"एक नारी को सुगति दी
एक को परिताप
छोड़ जाऊँगा जगत पर
कौन सी मैं छाप "7

उसके साथ ही राम को अब अपने पूर्व जीवन का अर्थात स्वयंवर प्रसंग ,वाटिका में सीता का प्रथम दर्शन, सीता - हरण ऐसी एक - एक घटना याद आती है । यान फिर दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ता है और धीरे -धीरे भूमि पर उतरता है ।

3.वनदेवता

प्रकृति के सुरम्य वातावरण में वनदेवता द्वारा राम का स्वागत किया जाता है । राम के आगमन से वन में उल्लासमय वातावरण छा जाता है । जब वे यान से उतरे तब वनदेवता अपने हृदय की बात कहने लगती है --

"यहाँ चौदह वर्ष तक
तुमने किया वनवास
तुम नहीं वन से अपरिचित
है हमें विश्वास "8

आगे वनदेवता वर्तमान के संदर्भ में राम के समक्ष अनेकों प्रश्न रखती है । इस कथांश में कथानक की गति मंद है । परंतु प्रकृति वर्णन सजीव है । उसके साथ ही वन्य तथा पिछड़े हुए लोगों की दुर्दशा का चित्रण किया है। आज अनेक योजनाओं का आयोजन किया जाता है, परंतु उनका लाभ भूखे जनों,तथा वन्य लोगों तक पहुँच नहीं सकता यह वस्तुस्थिति है । पिछड़े लोगों की यातनाओं का चित्र स्पष्ट करते हुए वनदेवता कहती है कि -

ये वन के विवश और पिछड़े हुए लोग कब तक यातनाएँ सहन करते रहेंगे । यहाँ के निवासी जो अधमरे हो रहे हैं, उन्हें कब संतोष मिलेगा ? ऐसी अवस्था में राम के सेवक इन पर मनमाने ढंग से अत्याचार करते हैं। इनको मानवता का व्यवहार क्यों प्राप्त नहीं होता? फिर भी राम दंड देने के हेतु दंडकवन में आये हैं ।

यह कवि का आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है । अंत में वनदेवता राम की अमानवीयता और अहंकार को देखकर वह इन शब्दों में चेतावनी देती है --

" राम ! तुम नगरवासी हो
चक्रवर्ती हो, सुपासी हो
विजन की करना नहीं अवमानना
विजन को अपना स्वजन ही जानना "[9]

राम इन शब्दों को सुनकर क्रोधित हो उठते हैं । और भयंकर रुप धारण करते हैं । कुछ समय के बाद क्रोध कम हो जाने पर वे वन की ओर चल पड़ते हैं ।

4. दण्डकारण्य --

इस अंश में दण्डकवन के अपूर्व प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रांकन कवि ने आलंबन एवं मानवीकरण शैली में किया है । राम दण्डकवन में प्रवेश करता है । फिर वे गोदावरी तट पर आ जाता है । कवि ने यहाँ पर दण्डकारण्य का विस्तार से वर्णन किया है । इसी स्थान पर समस्त प्राणी अपने -अपने कार्य में तल्लीन हैं । आदिवासी नर्तकों की टोलियाँ गलबहियाँ डाले नाचती फिरती हैं। शबर पशुओं का शिकार कर रहे हैं ।

गोदावरी - तट की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करते हुए तट के पशु पंक्षियों की क्रीडाओं का वर्णन किया है । कवि ने जुगनुओं, सर्प, मोर और मेंढक से युक्त दण्डकारण्य की प्रकृति का वर्णन किया है । उषा तथा चाँदनी के सौंदर्य का चित्र देखने लायक है -

"इस सिरे से उस सिरे तक दूर
नित्य छितराती उषा सिंदूर
भूमि का अक्षय अनन्त सुहाग
राम से ही जागता अनुराग
चाँदनी उतरी धरा पर
श्वेत रेशम-पंख फैलाये
आँख जैसा पात्र छोटा
कौन कितना रुप पी पाये "10

इसप्रकार उषा सिंदुर छितराती है और चाँदनी श्वेत पंख फैलाएँ हुए पृथ्वी पर उतर आती है । इस 'अंश' में कवि ने प्रकृति की अद्भूत छटा का मार्मिक ढंग से वर्णन किया है ।

5.प्रतिपक्ष --

'प्रतिपक्ष' में राम और शम्बूक का संवाद है जो कि काव्य का केंद्र बिंदु है। यह संवाद दो व्यक्तियों के बीच नहीं, शासन के व्यवस्था-पक्ष तथा प्रतिपक्ष के मध्य है । इसमें शम्बूक का विद्रोही स्वर अत्यंत सशक्त रुप में मुखरित हुआ है । राम लोक स्वीकृत व्यवस्था को स्वीकृत मानकर शम्बूक की तपस्या करना अधर्म समझता है । शम्बूक इसका विरोध करता है। उसके अनुसार व्यवस्था वर्गसीमित स्वार्थ से बनी है । शम्बूक वर्गभेद करनेवाली व्यवस्था को चुनौती देता है --

शम्बूक की कामना है कि स्वार्थी तथा वर्गभेद करनेवाली व्यवस्था शीघ्र ही नष्ट होना आवश्यक है । उसके साथ ही शम्बूक राम के लोकनायकत्व का खंडन करता हुआ कहता है --

"लोकनायक वही
जो विश्वास अर्जित कर सके
प्रत्येक का
और जो सारी प्रजा के
चित्त का प्रतिरुप हो "11

शम्बूक लोकनायक राजा का कर्तव्य प्रजाहित बताता है और 'जन्मा जायते शूद्रः' की मान्यता का विरोध करता है । शम्बूक की दृष्टि में सभी भूमिपुत्र हैं। संस्कार के द्वारा ही उच्च वर्ग बनता है । शम्बूक के ये शब्द सुनकर राम वर्णाश्रम धर्म में अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहते हैं --

तपस्या करना शूद्र का कर्तव्य नहीं है । उसके लिए सेवा-कर्म ही सुंदर आदर्श है । यह सुनकर शम्बूक राम को शूद्रघाती कहता है । उसे बार-बार धिक्कारता है कि व्यवस्था, तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है । तुम केवल निर्वासित महिपकुमार हो । शम्बूक राम के शासन पर करारा प्रहार करते हुए कहता है --

"जो तुम्हारे पक्ष में हो, कुछ करे अन्याय
तुम रहोगे मौन,भूलोगे समस्त उपाय
शासकों को सदा यह सुविधा रही है राम।
प्रजा को इससे सदा दुविधा रही है राम ।"[12]

शम्बूक के अनुसार राम क्षत्रिय ही नहीं ब्रह्मा भी कहलाता है । शम्बूक के बार -बार प्रहार करने पर भी राम विचलित नहीं होते और कहते हैं कि मैं सिर्फ शूद्रघाती नहीं हूँ, मैंने भ्रष्ट ब्राह्मण रावण का वध किया था । तब उत्तर देता हुआ शम्बूक कहता है कि तुमने यह काम अवध राजा के रुप में नहीं, अपने व्यक्तिगत कारण के लिए किया था । इतना कहने पर भी राम अपने पथ से जरा भी नहीं हटता ।

शम्बूक के मतानुसार राम ने भूमि-पुत्री सीता के प्रति भी अन्याय किया । यहाँ शम्बूक के गरिमामय व्यक्तित्व का परिचय मिलता है । अंत में शम्बूक समता, और श्रमप्रतिष्ठा पर जोर देते हुए कहता है --

सहज समता हो सभी में व्याप्त
व्यवस्था के हेतु यह पर्याप्त
भूमि पर फिर भूमि की संतान
करे शासन, श्रम बने श्रीमान "[13]

शम्बूक के इस कथन में वर्तमान शासकों के लिए संदेश है । शम्बूक वर्ण-व्यवस्था तोड़कर समाज में सहज समता की स्थापना और व्यक्ति के विकास पर बल देता है । पृथ्वी पर पृथ्वी का पुत्र ही शासन करे और श्रम करने वाला ही श्रीमान बने । शम्बूक के ये उद्गार सुनकर राम विवश होता

है और उसका सिर काट देता है। शम्बूक का वध होने पर भी उसका विद्रोही स्वर गीत बनकर गूँजने लगता है।

6. छिन्न शीश -

'छिन्न शीश' कथा का छटा सोपान है। इस अंश में शम्बूक की आत्मा के उद्गार अंकित हैं। इसमें हिंसा-अहिंसा,पाप-पुण्य, न्याय- अन्याय और धर्म -अधर्म के विषय में नई व्याख्या की गई है । वृक्ष की शाखा पर लटका हुआ शम्बूक का छिन्न शीश राम के समक्ष तर्कों की झड़ी लगा देता है । वह स्पष्ट रुप से कहता है ---

"शूद्र -तप से
विप्र बालक मर गया
        यह कल्पना की बात
शूद्र -वध से
विप्र -बालक जी उठा
यह जल्पना की बात "[14]

यदि कोई यह प्रश्न करे कि शूद्र की तपस्या और विप्र -सुत की मृत्यु तथा शूद्र -तपस्वी का वध एवं विप्र-पुत्र का जी उठना, क्या इन दो घटनाओं में कुछ कार्यकारण संबंध है ? कौन देगा इसका उत्तर ?

राम की शासन नीति का तीव्र विरोध करता हुआ शम्बूक कहता है कि साधना जो भी करता है, वह बलवान होता है । वैश्य,क्षत्रिय,तथा ब्राह्मणों के कर्म उचित एवं अनुचित दोनों होते हैं । शम्बूक बार-बार वर्ण-व्यवस्था पर घृणा प्रकट करता है । किसी के बलि से किसी की प्राण रक्षा यह पाप से युक्त एक आदिम व्यवस्था है । इस व्यवस्था से समाज में विषमता ही निर्माण हो सकती है ।

7.आत्मकथ्य -

'आत्मकथ्य' में शम्बूक अपने पूर्व जीवन का वृतांत सुनाता है ।शम्बूक का कहना है कि वह भूमि-पुत्र है, शूद्र है, मानव समाज में उसका आस्तित्व नगण्य सा है । जीवन में उसने ऊपर उठने का संकल्प किया था, मगर उसकी अभिलाषा पर तीखा प्रहार होता रहा । बचपन से यौवन तक ऋषिवर उसे दुत्कारते [illegible] करने पर भी उसे

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अश्पृश्य मानकर बाहर निकाल देते थे। तप करने की इच्छा से आसन लगाता तो ऋषि लोग उसे अधिकारविहित कहकर धिक्कारते थे । कुछ ऐसे भी थे जो उसे तप करने की स्थिति में अगर देखते तो डंडे से मारने लगते थे । जब वह अपने आस्तित्व की रक्षा में संतुलन खो देता तो ऋषि लोग सामुहिक रीति से पाद-प्रहार करते थे।

इस कठिन अवस्था में मुनियों के शाप भय से उसे सब संबंधियों ने छोड़ दिया । लेकिन एक मुनि ऐसे भी थे जिन्होंने उस पर कृपा प्रकट की । मगर उसका यह सुख विधि से न देखा गया और एक दिन दस्युओं ने शम्बूक पर आक्रमण किया और उसे एक शाखा से बाँध दिया इसी दशा में शम्बूक क्षीण हो गया और समझ गया कि वह तपस्या में निरत हो गया । उसके बाल बढ़ते गये और इस तरह मुनि वेश से आवृत्त हो गया । उसके मुनि-वेश को देखकर लोग दर्शन के लिए आने लगे और उसके प्रति श्रद्धा -भक्ति प्रकट करने लगे । इस प्रकार यह घटना पुरानी हो गयी ।

शम्बूक राम से कहता है कि तुमने मुझे बोलने का अवसर दिए बिना मेरा वध किया जिससे मेरे मन को ठेस पहुँची है । मेरा प्रेत कह रहा है कि विप्र बालक की मृत्यु का कारण मेरी तपस्या नहीं है अपितु वास्तविकता यह है कि जब वह पेड़ पर चढ़ा था तो साँप ने उसे काट दिया । इससे बालक तुरंत अचेत हो गया । मंत्र तंत्रोपचार करने पर भी विप्र हार गया और दरबार के द्वार पर आकर राम पर दोषारोपण करने लगा । फिर विष नाशक जड़ीसे बालक जीवित हो गया । अंत में शम्बूक इसे नियति का खेल कहता है --

अब करो मत व्यर्थ,
उसके हेतु पश्चाताप
त्रुटि हुई अनजान में जो
है नहीं वह पाप

लोग कहते हैं
कि यह लीला तुम्हारी है
किन्तु मानव के लिए
यह बहुत भारी है -15

इस प्रकार शम्बूक राम द्वारा अनजाने में हुई इस भूल को पाप नहीं मानता । लोग कहते हैं कि यह तुम्हारी सारी लीला है, परंतु यह लीला मनुष्य के लिए बहुत भारी पड़ रही है ।

अंत में शम्बूक स्पष्ट करता है कि जिस समाज में व्यक्ति का सम्मान होता हो, वह समाज सुरक्षित है ।ऐसा समाज ही मानव समस्या का सटीक निदान कर सकता है । जो राज्य संस्कृति से रहित है, वह दर्प मात्र है । ऐसा राज्य मानव नियति को सर्प बनकर डसने वाला है। यहीं पर 'आत्मकथ्य' अंश समाप्त होता है ।

8.रक्त - तिलक -

प्रस्तुत खंडकाव्य का 'रक्त-तिलक' अंतिम अंश है। इस अंश में शम्बूक के कटे शीश का एकलव्य के कटे अँगुठे से प्रतिकात्मक वार्तालाप है । एकलव्य की दशा भी यही हुई थी । एकलव्य की प्रगति को भी उच्च वर्ग सहन नहीं कर पाया था । अतः उसका अँगुठा शरछिन्न कर दिया था ।

बाण - विद्या में निपुण द्रोणाचार्य ने गुरुदक्षिण में एकलव्य से दाहिने हाथ का अँगुठा छीन लिया और राम ने व्यवस्था के नाम पर शम्बूक का वध कर दिया । इस प्रकार प्रस्तुत अंश में कवि ने एकलव्य और शम्बूक की एकता को सामने लाकर यह अभिव्यक्त किया है कि अभिजात्य वर्ग किस प्रकार शूद्रों के अधिकारों को छीनता है और उसे आगे बढने नहीं देता । शम्बूक की आत्मा एकलव्य से कहती है कि मेरी जो नियति थी, वही तुम्हारी हुई । शम्बूक की आत्मा एकलव्य से कहती है --

"तुम्हारी संतप्त आत्मा में
-----आग है
प्रतिक्षण धधकते अपमान की "[16]

शम्बूक और एकलव्य की आत्मा में अपमान की जो आग है वह वर्तमान युग के मानव के दर्प अहंकाररुपी वासना को भस्म कर सकती है।

यह अंश एकदम छोटा होते हुए भी अत्यंत प्रभावकारी बन गया है । इस अंश में शम्बूक की पीड़ा अत्यंत सशक्त शब्दों में मुखरित हुई है । इसी के साथ 'शम्बूक ' का कथानक समाप्त होता है ।

'शम्बूक ' कथा पुरानी व्यथा नई -

रामायण और महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिनके माध्यम से समकालीन समस्याओं

का समाधान खोजना अपेक्षाकृत अधिक आसान और अधिक प्रभावशाली रहा है । डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने 'एकलव्य' खंडकाव्य का सृजन कर महाभारत की पुरानी कथा को नई व्यथा के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया है । उसी प्रकार रामकथा के माध्यम से समकालीन समस्याओं का समाधान खोजनेवाले हिंदी प्रबंध काव्यों की परंपरा में 'शम्बूक ' एक सशक्त रचना है । यह कृति रचनाकार डॉ. जगदीश गुप्त के मानस में संचित कलात्मक संप्रेषणाओं का सुपरिणाम है ।

आधुनिक जगत की विषम परिस्थिति और मानवी जीवन की अनेक समस्याओं की अभिव्यंजना के लिए डॉ. जगदीश गुप्त ने प्रतिकों एवं आख्यानों का रचनात्मक प्रयोग समीक्ष्य प्रबंध -कृति में किया है । 'कविकथन' में स्वयं कवि ने इस तथ्य को स्वीकार किया है --

"आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व 11-7-70 को मैंने 'पुरावृत्त' नाम से कुछ ऐसी कविताएँ लिखने की योजना बनायी थी जिनमें प्राचीन कथाओं तथा पौराणिक प्रसंगो को नयी अर्थवत्ता के साथ नये रुप में प्रस्तुत करने का संकल्प निहित था । जो बात सीधे या किसी अन्य प्रकार से कहना संभव न हो उसे कह सकने में ऐसी कथात्मक संयोजना निश्चित रुप से सहायक होती है ।"[17]

इस कथन से स्पष्ट होता है कि गुप्त जी समीक्ष्य काव्य के माध्यम से समकालीन संदर्भों एवं युगिन परिवेश को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं । शम्बूक के माध्यम से कवि ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है । रामायण की 'शम्बूक - वध' कथा का आधार लेकर कवि ने आधुनिक काल की राजनीतिक और सामाजिक दुर्दशाओं का चित्रण किया है ।

अ. राजनीतिक संदर्भ --

'शम्बूक ' खंडकाव्य में पात्र बहुत कम हैं। इसमें प्रधान पात्र हैं -- शम्बूक और राम । अन्य पात्र वनदेवता , नारद और वशिष्ठ का कोई खास महत्व नहीं है । इस काव्य का नायक है -- शम्बूक, जो कि कवि की वाणी का वाहक है । दूसरा प्रधान पात्र है ---राम । मर्यादापुरुषोत्तम राम यहाँ व्यवस्था, रुढ़िवादी सभ्यता, शोषक तथा अहंकार का प्रतीक है । शम्बूक भूमि-पुत्र है, जो कि शोषित जनता का प्रतीक है । कवि ने'शम्बूक ' के माध्यम से आधुनिक स्थितियों का चित्रण किया है ।

1. समाजव्यवस्था और राजनीति -

इस काव्य में व्यवस्था का प्रतीक राम अयोध्या का राजा है । वह स्वयं को सर्वोपरी मानता है । वह अपनी राजव्यवस्था, रुढ़ि परंपरा का पूरा समर्थन करता है । राम को अपने सुशासन पर गर्व है । उसकी दृष्टि में उसकी शासन पद्धति परिशुद्ध है । परंतु शम्बूक राम की व्यवस्था को चुनौती देता हुआ इस व्यवस्था को वर्गसीमित व्यवस्था कहकर कड़ा विरोध करता है ।

इसके माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि सट्टाबाजारवाले , दलाल, तस्कर तथा बड़े बड़े उद्योगपति आज की वर्गसीमित व्यवस्था है । यह आदिम व्यवस्था पूर्णत : स्वार्थ से ग्रस्त है । आज की राजनीति जनता के हित एवं कल्याण से जुड़ी राजनीति नहीं रही है । वह तो कुर्सी से चिपकी चापलूसों की राजनीति बन चुकी है । आज के राजनीतिज्ञ स्वार्थ के लिए दल बदलते हैं । संसद सदस्य स्वयं को बेच देते हैं। इसी प्रकार बिके जानेवाले सांसद संसद कैसे चलायेंगे ?स्वार्थी तथा चापलुसी राजनीतिज्ञ देश की जनता का क्या भला कर सकते हैं?

धर्म और जाति पर आधारित राजनीति के अनेकों उदाहरण आज की राजनीति में दिखाई देते हैं । मजहब के नाम पर जनता का शोषण राजनीतिज्ञ किसप्रकार कर रहे हैं इसका जीता जागता सबूत है -- राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद । इस विवाद में धर्म नहीं बल्कि राजनीतिक अधर्म की बू अधिक है । अतः स्वार्थी , चापलुसी राजनीतिज्ञों का ध्वंस वांछनीय है । अतः इस वर्गसीमित राजव्यवस्था को चुनौती देता हुआ शम्बूक कहता है --

"जो व्यवस्था
वर्ग-सीमित स्वार्थ से
हो ग्रस्त
 वह विषम
 घातक व्यवस्था
 शीघ्र ही हो
 अस्त "18

राजसत्ता ने सतर्कता से शासन चलाना चाहिए । चापलूसों के कहने पर कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए । यदि वर्ग-सीमित स्वार्थ के लिए निर्णय लिया तो इससे आम जनता का शोषण

किया जा सकता है । इसलिए सोच समझकर आम जनता के हित का ही निर्णय लेना आवश्यक है ।

विप्र -बालक के मर जाने का कारण शम्बूक तप माना जाता है क्योंकि नारद और वशिष्ठने यह बताया था । नारद और वशिष्ठ के कहने पर राम भरोसा रखता है और शम्बूक का वध करने का निर्णय लेता है । राम का यह निर्णय अत्यंत विसंगत और घृणास्पद है । जैसे राम ने शम्बूक का वध किया इसी तरह आज भी शासन के जनहितविरोधी निर्णय के कारण अनेकों शम्बूक पीसे जाते हैं, जिनका शोषण किया जाता है यह अत्यंत घृणास्पद है । आज की राजनीति भी नौकरशाही की कटपुतली बनतीजा रही है । आज की नौकरशाही में भी नारद और वशिष्ठ की कमी नहीं है ।

2.जनता और राजनीति -

आज की राजनीति पुरी तरह जनता से विमुख बन गयी है । भारत स्वतंत्र होने के बाद देश का विकास करने के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का आयोजन किया गया । इन पंचवर्षीय योजनाओं का एक प्रमुख उद्देश था - पिछड़े तथा वन्य लोगों की उन्नति । परंतु इसके विपरित चित्र आज दिखायी दे रहा है ।

पंचवर्षीय योजनाओं की नारेबाजी की जाती है, परंतु इन योजनाओं का लाभ पिछड़े वर्ग तक पहुँच नहीं सकता । शासन द्वारा लोगों के कल्याण की दृष्टि से अनेक योजनाओं का आयोजन किया जाता है । जैसे - संजय गांधी निराधार योजना, इंदिरा गांधी आवास योजना,दरिद्ररेखा के नीचे आनेवाले लोगों की योजना । इन सभी योजनाओं का आयोजन गरीब, दीन-दलित, पददलित तथा वन्य पिछडे लोगों के कल्याण के लिए किया जाता है । परंतु इन सभी योजनाओं का लाभ इन भूखें लोगों तक पहुँच नहीं सकता, यह इन योजनाओं में दोष है। मानो इस पंचवर्षीय योजनाओं की दुर्दशा का अंकन करते हुए ही कवि ने कहा है -----

"सुना
फैली हैं तुम्हारी
योजनों तक योजनाएँ
पर अबर
सीमित रहीं
आयोजनों तक योजनाएँ

पर्वतों ,नदियों ,पत्थरों
निर्जनों तक योजनाएँ "[19]

आज स्वतंत्र भारत में निरक्षर तथा वन्य पिछड़े लोग अनेक प्रकार की घोर यातनाएँ सहन करते हैं। शासन द्वारा इन पिछड़े वर्ग के लोगों की उन्नति करने के लिए अनेक नारें लगाये जाते हैं । निरक्षर लोगों के लिए " प्रौढ साक्षरता अभियान " चलाया जाता है । आदिवासी लोगों के कल्याण के लिए विशेष प्रकार की सुधार योजनाओं का आयोजन किया जाता है, परंतु इन सुधार योजनाओं का लाभ भी उच्च वर्ग के लोग ही लेते हैं । 'गरिबी हटाव' के नारें लगाये ,पर चालीस - पैंतालीस वर्ष हुए दारिद्रय निर्मूलन नहीं हो पाया । इसलिए ऐसा लगता है कि आज की राजनीति जनता से विमुख हो रही है ।

3.लोकनायक और राजनीति --

राजव्यवस्था की तरह राजनीतियों का भी पतन होने लगा है । राजनीतिक नेताओं में सत्चरित्र,बुद्धिमत्ता, लोककल्याकारी दृष्टि, स्वार्थहीनता आदि गुणों का होना आवश्यक है। लोकनायक यह प्रजा का प्रतिरुप होना चाहिए । इसलिए शम्बूक लोक -नायक राजा का कर्तव्य बताते हुए 'जन्मना जायते शूद्रः' की मान्यता का विरोध करता है । लोक-नायक की व्याख्या करता हुआ शम्बूक कहता है ----

"लोकनायक वही जो --
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे
कर्म और अकर्म समझे
लोकनायक वही
जो विश्वास अर्जित कर सके
प्रत्येक का
और जो सारी प्रजा के
चित्त का प्रतिरुप हो "[20]

अत:स्पष्ट है कि आज की राजनीति में हर नेता अपने आपको लोकलायक, लोकउद्धारक समझने लगता है । लेकिन उनकी कथनी और करनी में जमीन-आसमान का फर्क होता है ।ऐसे नेताओं

पर जगदीश गुप्त जी ने शम्बूक के कथन के माध्यम से करारा व्यंग्य कसा है ।

आज भारत में राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में लोकनायक तथा उच्च वर्ग सुरक्षित स्तर पर बैठा है । उनमें सत्ता लिप्सा और स्वार्थ परक मनोवृत्ति दिखाई देती है । नेताओं द्वारा निम्न स्तर के लोगों पर अन्याय किया जाता है । उनकी आवाज दबायी जाती है । जैसे राम के द्वारा बलात शम्बूक की आवाज दबायी है । डॉ. कृष्णचंद्र के मतानुसार --
"जिसप्रकार शम्बूक के माध्यम से भारतीय जनतांत्रिक व्यवस्था के द्वारा दबायी जानेवाली आवाज को उठाया है वही शम्बूक की मौलिक पहचान है।"[21]

इससे स्पष्ट है कि 'शम्बूक' में सत्तायी अव्यवस्था के विरुद्ध प्रश्नचिह्न लगाया है ।

4. शोषण और राजनीति --

भारतीय जनतांत्रीक व्यवस्था में कुछ दोष हैं, जिसके कारण सामान्य लोगों का शोषण किया जाता है । महात्मा गांधी जी की धारणा थी कि स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश में सुराज्य तथा राम राज्य निर्माण हो जाय । परंतु आज कुराज्य के लक्षण नजर आने लगे हैं । 'देवार्चन' के नवम सर्ग में श्री करील ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि ----

"यहाँ सुराज्य नहीं है, जहाँ बड़े बड़े महंत खड़े खड़े देश को निचोड़ते हैं । जहाँ मुनष्य भूख से कराह कर प्राण छोड़ देते हैं, जहाँ स्वार्थ के लिए लोग स्वधर्म को छोड़ देते हैं, जहाँ लोग दूसरों को विपत्ति में ढ़केल कर भाग जाते हैं । जहाँ कर्मयोग द्वारा प्राप्त भाग्य को नहीं जगाया जाता, जहाँ मनुष्य भीख माँगते हैं, जहाँ प्रजा दबी हुई हैं, जहाँ धर्म अखंड रुप से विद्यामान है, जहाँ प्रचंडता का प्रचंड शासन है , जहाँ पेट के लिए हाथ जोड़ा जाता है और जहाँ गरीब का गला मरोड़ना सुकर्म माना जाता है और फिर भी यदि कोई ऐसे राज्य के सुराज्य कहता है तो यह नितांत मुर्खता है ।"[22]

इस प्रकार का उत्पीड़क कुराज्य हमारे देश में है । इस प्रकार के कुशासन और कुराज्य में भ्रष्टाचार भी उत्पन्न होता है और पनपता है । जब समाज में भ्रष्टाचार बढ़ता है तो समझना चाहिए यह कुशासन का परिणाम है । कुशासन में जनता यह भी नहीं जानती कि वह जी रही है या मर रही है । आज की राजनीति ने हमें यह भी साबित कर दिखाया है कि राज्य

चलाने वाला दल चाहे कॅंग्रेस हो, या चाहे जनता पार्टी हो या जनता दल हो, इन सभी ने सत्ता में आ जाने के पश्चात जनता का शोषण बराबर किया है । जगदीश गुप्त जी की इच्छा यही रही है कि शम्बूक के समान राजकर्ताओं को मुहतोड़ जबाब देने का साहस भारतीय जनता में निर्माण होना चाहिए ।

5.न्याय और राजनीति --

स्वतंत्रता के समान ही न्याय को भी सामाजिक आदर्श माना है। किसी सुव्यवस्थित राज्य का एक प्रमुख उद्देश नागरिकों के हित के लिए न्याय की स्थापना और उसकी रक्षा करना होता है । न्याय के लिए राज्य में कानून,पुलिस और न्यायालय की व्यवस्था होती है । न्याय के लिए पुरस्कार और दंड दोनों का प्रयोग किया जाता है । न्याय के संबंध में यथार्थवादी दृष्टिकोण यह है कि वह सत्य से दूर नहीं होना चाहिए ।

विप्र - बालक के मर जाने का कारण शम्बूक तप माना जाता है । इस बात पर राम विश्वास रखता है और यथार्थवादी दृष्टिकोण न अपनाकर उसका वध करता है --

"अन्ततः
नृप राम ने
लाचार हो,
कर दिया खड्ग -प्रहार
कट गया
शम्बूक का सिर
बह चली
कच्चे रुधिर की धार "[23]

यहाँ राम व्यवस्था के रक्षार्थ शम्बूक का वध करता है । राम परंपरा की रुढ़ियों से जकड़ा हुआ है । यदि वह नारद और वशिष्ठ के निर्णय के अनुसार शम्बूक का वध नहीं करता, तो उसे अपने पद से वंचित होना पडता । इसलिए राम ने सत्य, असत्य का विचार न करते हुए शूद्र शम्बूक का वध किया , जो कि अत्यंत लज्जास्पद है ।

न्याय करने के पूर्व न्यायधीश के लिए पक्ष विपक्ष की बातें सुनना आवश्यक है ,किंतु आज कल वकिलों के तर्क और वितर्क के मायाजाल में सत्य खो जाता है और परिणामस्वरुप न्याय

नहीं हो पाता । आज की न्याय पद्धति में यह एक दोष है । वर्तमान न्याय व्यवस्था में दूसरा दोष यह है कि न्याय बहुत महँगा और साधारण व्यक्ति के पहुँच के बाहर हो गया है । मुकदमे बहुत लम्बे चलते हैं और ज्यों ज्यों मुकदमा खिंचता है त्यों - त्यों वकिलों की फीस भी दरिद्र द्रौपदी के चीर की तरह बढती जाती है । ऐसी अवस्था में आज सामान्य और दीन-दलित लोगों को न्याय नहीं मिल पाता ।

न्यायालय को सभी देशों में और सभी कालों में पवित्र संस्थान माना है। न्यायालय की दृष्टि में राजा रंक सभी समान होते हैं । न्यायालय अपने कटघरे में राष्ट्रापति और प्रधानमंत्री तक को बुला सकता है । वह दूध को दूध और पानी को पानी कर देता है । उसकी तराजू पर सत्य ही तुला सकता है । यह न्याय के संबंध में आदर्शवादी विचारधारा है । परंतु न्याय के संबंध में यथार्थवादी स्थिति यह है कि वह सत्य से दूर चल रहा है । जैसे व्यवस्था के प्रतीक राम शूद्र शम्बूक पर अन्याय करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता,असत्य को ही सत्य मानकर नारद और वशिष्ठ जैसे चापलूसों के कहने पर शम्बूक का वध कर देता है । आज भी समाज में ऐसे अनेकों शम्बूक हैं, जिनको अन्याय, अत्याचार सहन करना पड़ता है ।

6.युद्ध और राजनीति --

युद्धों का इतिहास तो प्राचीन है, परंतु परमाणु अस्त्रशस्त्रों के इस युग में भी युद्धों की चिंता ने भयानक रुप धारण कर लिया है । युद्ध एक सामुहिक क्रिया होते हुए भी उसका मूल एक प्रवृत्ति के रुप में व्यक्ति के मानस में ही विद्यामान होता है । समुदाय नहीं लड़ना चाहता, पर युद्धकी विषैली लपटें व्यक्तिओं की साँस से ही फैलती हैं । राजनीतिज्ञों के अविवेक और बर्वरता से ही युद्धजनक स्थिति निर्माण होती है । जैसे युद्धों का कारण शम्बूक सत्ता पक्ष एवं उच्च वर्ग की लोलुपता मानता है -

"क्या कभी उन लोलुपों पर भी किया है क्रोध ?
क्या कभी उन देवताओं को दिया उद्बोध ?
या मुझी को आज देने आ गये उपदेश
क्या नहीं होता तुम्हारे चित्त को कुछ क्लेश ?"24

शम्बूक स्पष्ट करता है कि सीता का हरण यह राम का व्यक्तिगत कारण था । अपनी उसी स्वार्थ - सिद्धि के लिए वानरों और राक्षसों में युद्ध करवाया । इस युद्धजनक विपत्ति का कारण स्वयं राम था । अपनी स्वार्थ - सिद्धि के लिए स्वयं राम ने युद्धजन्य

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

स्थिति निर्माण की ।

विश्व के दो महायुद्ध, भारत -पाकिस्तान युद्ध, भारत -चीन युद्ध तथा आज जिसके परिणाम विश्व की जनता भुगत रही है वह इराण - इराक युद्ध, सभी की जड़ है - राजनीतिज्ञ की मानसिकता । इसीलिए कहा जाता है कि युद्ध की उपज व्यक्ति की मानसिकता में होती है । इराण - इराक युद्ध सद्धाम हुसेन के मन में ही उपजा था । अपनी स्वार्थ -सिद्धि तथा लोलुपता के लिए उन्होंने युद्ध का निर्माण किया ।

राजनीतिज्ञों के अविवेक और स्वार्थ के कारण युद्ध खेले जाते हैं, परंतु उसका भीषण दुष्परिणाम जनता को भुगतना पडता है , इसलिए युद्ध को नकार दियाहै । युद्ध विशेष परिस्थितियों में आवश्यक भी होते हैं । यदि बाह्य आतंकवादी और आक्रमणकारियों ने हमला किया तो जनता की रक्षा करने के लिए और आक्रमणकरियों के विनाश के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाता है ।

युद्ध सामान्यतः असभ्यता और बर्बरता का लक्षण है । आज वर्तमान युग में विश्व सभ्यता के इतने उच्च चरम शिखर पर पहुँचा है कि अब देशों को सेना रखने की आवश्यकता नहीं है, परंतु दुष्ट दमन के लिए युद्ध अभी भी आवश्यक है । युद्ध संहारक होता है, इसलिए अनुचित है, पर स्वत्व,धर्म रक्षार्थ युद्ध आवश्यक है । युद्धों के कारण एकता, राष्ट्राभिमान की वृद्धि होती है । इस प्रकार कवि ने कुछ युद्धजनक कारण भी स्पष्ट किये हैं ।

आ. सामाजिक संदर्भ -

साहित्य सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है । समाज के सम्मुख आनेवाली समस्याओं को सुलझाने में वह मार्ग-प्रदर्शन करता है । साहित्य का अंतिम उद्देश्य संपूर्ण मानवता और प्राणीमात्र को प्रेम तथा एकता के सुत्रों में बाँध कर समानता की भूमि पर प्रतिष्ठित करना रहा है ।

'शम्बूक ' खंडकाव्य की कथा पौराणिक है लेकिन इस कथा के सहारे उन्होंने अनेक नवीन व्यथाओं के उठाया है । आधुनिक युग में स्वराज्य प्राप्ति के बावजूद अपने ही राज्य में दलितों पर अन्याय किया जाता है । वर्णव्यवस्था से ही समाज में जातिव्यवस्था, असमानता, असहनीय विषमता निर्माण हुई है । अंधविश्वास और रुढि परंपराओं से समाज आज भी मुक्त नहीं

हुआ है । आज के वैज्ञानिक युग में भी अनेक प्रकार की अंधश्रद्धाएँ तथा अंधविश्वास भारतीय समाज में प्रचलित हैं । इन अंधविश्वासों में निम्न जाति के लोग ही अधिक फँसाये जाते हैं ।

डॉ. जगदीश गुप्त ने प्रस्तुत खंडकाव्य में सामाजिक दशाओं का चित्रण किया है । आज के युग के लघु मानव की शोषित दशा का अंकन 'शम्बूक ' में हुआ है ।

1. जातिव्यवस्था --

जातिव्यवस्था या अश्पृश्यता एक मानवीय समस्या ही नहीं, सामाजिक कलंक भी है । इसलिए जातिव्यवस्था का अनेक आधुनिक कवियों ने विरोध ही किया है । समाज के उच्च वर्ग ने अछूतों को उनके मूलभूत अधिकारों से भी वंचित कर रखा था । उनके साथ असभ्य अपमानपूर्ण वर्तन किया जाता था ।

स्वतंत्रता के पश्चात संविधान के द्वारा हरिजनों को सवर्णों के कुएँ से पानी भरने तथा मंदिर में जा सकने का अधिकार मिल चुका है, पर स्वतंत्रता से पूर्व हरिजनों को मंदिर प्रवेश का न सामाजिक अधिकार था न वैधानिक ।

डॉ. जगदीश गुप्त जी ने भी 'शम्बूक ' के माध्यम से जातिव्यवस्था की समस्या को उठाया है । जातिव्यवस्था समाज के लिए व्यर्थ है । इसलिए जातिव्यवस्था के जन्म के आधारपर होने का वे विरोध करते हैं ---

सभी पृथ्वी -पुत्र हैं तब जन्म से
क्यों भेद माना जाय
जन्मजात समानता के तथ्य पर
क्यों खेद माना जाय
'जन्मना जायते शूद्र : '
क्या नहीं सब के लिए यह सत्य
और 'संस्कारात ही द्विज उच्यते '
की घोषणा का क्यों न हो सातत्य -25

अत:जातिव्यवस्था यह आदिम व्यवस्था है, जिससे समाज में विषमता ही फैली है । जातिभेद से समाज की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ सकती । इसलिए इस व्यवस्था का ध्वंस वांछनीय है --

"वह विषम
घातक व्यवस्था
शीघ्र ही हो
अस्त "[26]

जातिव्यवस्था का निरंतर विरोध देते हुए भी और संविधान के पृष्ठों से उसे समाप्त कर दिए जाने पर भी अभी भारतीय समाज जीवन से उसका उन्मुलन नहीं हुआ है । भारत आजाद होकर चालीस बरस बीत चुके हैं परंतु आज भी छुआछूत भेदभाव है । इसलिए आज यह आवश्यक है कि अछूतों को अपना ही अंग मानते हुए छुआछूत से बचकर अछूत लोगों का उद्धार किया जाए । अछूत लोगों पर यह बड़ा अन्याय है कि उन्हें देव -दर्शन से वंचित रखा जाय । उनके साथ अपमानपूर्ण, असभ्य और जघन्य वर्तन किया जाय ।

स्वराज्य प्राप्ति के बावजूद अपने ही स्वराज्य में सरे आम दलितों का शोषण किया जाता है । उनकी बस्तियाँ जलाई जाती हैं, उनकी आँखें निकाली जाती हैं । उनकी माँ बहनों को नग्न बनाकर उनका जुलुस निकाला जाता है । मंदिर के दरवाजे तक पहुँचते ही उनका कत्ल किया जाता है । रुढ़ि परंपराओं का उल्लंघन करनेसे उन पर बहिष्कार डाला जाता है । आज ऐसे अनेकों उदाहरण हमें दिखायी देते हैं । "आज स्वराज्य में रहने वाले अनेक हरिजनों को उनके पारंपारिक काम करने के लिए मजबूर बनाया जाता हैं । उन्हें मानव सुलभ अधिकार से वंचित किया जाता हैं। दलितों ने यदि उनके पारंपारिक काम करने से नकार घोषित किया तो उनकी बस्तियाँ जलाई जाती हैं । 'अश्पृश्यता निर्मूलन' कार्य में अग्रणी एवं गौरवान्वित कोल्हापुर जिले के कुडित्रे नामक गाँव में भी ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं ।"[27]

इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि छुआछूत की भावना लोगों के मन में किस प्रकार घर कर बैठी है । कानूनों के द्वारा उसका उन्मूलन किया गया परंतु मानव के मन से उसका पूर्णत : उन्मूलन नहीं हुआ है । अनेकों शम्बूकों की आवाज आज के स्वराज्य में भी उसी प्रकार दबाई जा रही हैं जिस प्रकार राम के रामराज्य में दबाई गयी थी ।

कवि ने शम्बूक के कटे शीश का एकलव्य के कटे अँगुठेसे प्रतीकात्मक वार्तालाप दिखाकर दोनों में साम्य स्थापित किया है । शम्बूक शूद्र होने के कारण उसे अपना सिर देना पड़ा और एकलव्य भी शूद्र होने के कारण उसे गुरु द्रोणाचार्य से अपना अँगुठा देना पड़ा इस प्रकार रचनाकार ने युग -युग से हो रहे वर्णगत संकीर्ण व्यवहार का रुपांकन किया है । यहाँ इसे

मिटाने का संकल्प भी किया गया है, जो निश्चय ही प्रेरणास्पद है -

"ज्वाला में जलते हुए
हाथ का तुम्हारे ही
दाहक संस्पर्श एक
मैं अपने
सदियों से ठंडे पड़े
माथे पर
शिव के तिसरे नेत्र की तरह
वह रक्त-तिलक
प्रज्वलित होते ही
कर देगा भस्मसात्
झूठे अहंकार की
पूरी वासना - देह
निस्संदेह ।"[28]

कवि को विश्वास है कि युग युग से होनेवाले अन्याय के कारण दबी हुई दलित जनता जागृत होगी । वह शम्बूक की तरह अपने अधिकार की माँग करेगी और शिव के तीसरे नेत्र की तरह वासना और जाति -भेद को जलाकर भस्मसात कर देगी ।गुरुदक्षिणा के रुप में अँगूठा माँगने वाले दकियानुसी गुरु को आज आवश्यकता है शिष्यों द्वारा अँगूठा दिखाने की ।

भारत स्वतंत्र होने के पश्चात अश्पृश्यों को संवर्णों के साथ लाने के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं । उनकी आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति करने के लिए आरक्षण की सुविधा उन्हें दी है। उनके लिए नौकरियों में, राजनीतिक क्षेत्र, तथा सहकारी संस्थाओं में आरक्षण रखकर न्याय दिलाने का प्रयत्न किया जा रहा है । शम्बूक की माँग भी यही है कि हम दलित तथा शोषितों को भी सामाजिक प्रवाह के साथ जीने का अधिकार दिया जाय । जगदीश गुप्त जी का शम्बूक आज के इन शोषितों की वाणी में ही बोल उठता है ।

2. शोषित-वर्ग -

समाज का शासक वर्ग अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए मनुष्य -मनुष्य के बीच

भेद-भावना उत्पन्न करता रहा है और मनुष्य- समाज में उसने कभी पारस्परिक स्नेह व्यवहार तथा एकत्व स्थापित होने नहीं दिया है । इस प्रकार मनुष्य समाज का एक वर्ग जो शोषण और उत्पीड़न पर जीवित है, मानवता की प्रगति के मार्ग की सब से बड़ी बाधा है ।

समाज के शोषित और दलित वर्ग के प्रति जगदीश गुप्त में मात्र सहानुभूति ही नहीं, उनकी दशा को सुधारने के लिए एक क्रांतिकारी आवेश भी है । आज समाज में जो शोषित वर्ग है , उनमें श्रमिक, मजदूर,दलित तथा किसान प्रमुख हैं । ये शोषित वर्ग निरक्षर होते हुए भी वे अधमरे और अधपेट रहते हैं । उनकी दुर्दशा का चित्रण करते हुए कवि ने कहा है ------

"ये निरक्षर वन्य पिछड़े लोग
सहते रहें कब तक यातनाएँ
अधमरे ये कहाँ तक
संतोष को खाएँ -चबाएँ "[29]

दीन-दलितों के प्रति सहानुभूति तो सभी प्रदर्शित करते हैं, किन्तु सहानुभूति से ही कुछ होता नहीं । उनके जीवन की समस्याएँ ,उनकी भूख, उनके अर्धनग्न शरीर,उनके रुग्ण शिशु और उनके गंदे और छोटे घर केवल सहानुभूति के मधुर वचनों से नहीं सुधर सकेंगे । गुप्त जी का विश्वास है कि क्रांति की आग ही इन दलितों के दयनीय जीवन की विभीषिकाओं को भस्म करेगी और स्वस्थ मानवता की प्रतिष्ठा करेगी ।

पूँजीवादी व्यवस्था में श्रमिक और उनके श्रम का पूरा शोषण होता है । श्रमिक, मजदूर तथा किसान शोषित होते हुए भी वे निर्माता हैं, मूढ़ और अशिक्षित होते हुए भी वे सभ्य और शिक्षितों से अधिक महामानव हैं । क्योंकि उन्हें स्वयं को संपदा और अधिकारों का जरा भी मोह नहीं है। कार्यकुशल यह यंत्री अपनी श्रम-पटुता के बल पर जीवित हैं ।

मजदूरो की तरह कृषक वर्ग भी शोषित है । वह युग-युग से रुढ़ि रक्षक, कर से जर्जर, ऋणग्रस्त,स्वल्प पैत्रिक भूमिवाला, पर पीड़ित, शोषित, विश्व प्रगति से अनभिज्ञ है । किसानों के बल पर ही गगन चुम्बी, प्रासाद,राजाओं का संपूर्ण वैभव, भक्ति की साधना चलती है । परंतु इन किसानों की स्थिति शोचनीय बनी हुई है । आज की राजनीति में इन निरक्षर, वन्य जनों की उन्नति के लिए कुछ योजनाएँ बनाई जाती हैं, लेकिन वे सारी योजनाएँ आयोजनों तक ही किस प्रकार सीमित रहती हैं, इस पर इसके पहले विस्तार से विवेचन किया है ।

आज मानवता के समक्ष यही सबसे कठीन प्रश्न है कि,दुर्बल,लाचार और शोषित मनुष्य कैसे उठे और सभी सुख सुविधाओं को समेटने वाले शोषक किस प्रकार झुकाये जाय, जब तक समाज में असमानता है तब तक मानवत्व अपमानित होता रहेगा । माँग और सुधार की शिष्ट आवाज सुविधा प्राप्त शोषक वर्ग के कानों में नहीं ठहरती है । इसलिए गुप्त जी की मान्यता है कि क्रांति की हुँकार से ही स्वार्थ पोषित और वैषम्य विधायक गद्दियों को हटाया जा सकेगा ।

3. रुढ़ि - परंपरा, और अंधविश्वास --

समाज के अनेक दोषों में रुढ़ि-परंपरा और अंधविश्वास का मोह ऐसा दोष है, जो अनेक दोषों का मूल है । अतः यह दोष अपेक्षाकृत अधिक भीषण है । रुढ़ि-परंपराओं के प्रति सामान्य लोगों में इतना मोह होता है कि रुढियाँ बड़ी कठिनाई से टूट पाती हैं । इसलिए सामाजिक एवं धार्मिक विद्रूपताओं के प्रति आक्रोश व्यक्त करके समाज को सुव्यवस्थित करने का गुप्त जी ने प्रयत्न किया है ।

विप्र-सुत की मृत्यु का कारण शम्बूक तप माना जाता है । नारद और वशिष्ठ स्पष्ट करते हैं कि राम राज्य में पाप बढ़ गया है । शूद्र-मुनि के तप से ही विप्र बालक को सर्प दंश हुआ और वह मर गया । अतः नारद इस पाप से मुक्तता पाने का उपाय स्पष्ट करते हैं ---

"विपिन जाकर
शूद्र -मुनि -वध
जब करेंगे राम
विप्र-सुत
होगा तभी जीवित
सहज परिणाम "30

वस्तुतः शूद्र-मुनि का वध और विप्र-पुत्र का जीवित होना इसका कुछ संबंध नहीं है । परंतु स्वार्थ के लिए समाज में अनेक अंधविश्वास निर्माण किए गये हैं । सामान्य जनता रुढ़ि-परंपरा तथा अंधविश्वासमें इतनी जकड़ी हुई हैं कि वह इनसे मुक्त नहीं हो सकती ।

अंधविश्वासों की जड़े इतनी मजबूत बनी हैं कि जिससे समाज की प्रगति नहीं हो सकती । इसलिए गुप्त जी का आग्रह है कि जो रुढ़ि-परंपरा तथा अंधविश्वास समाज में हैं, उन्हें बदलना चाहिए। रुढ़िवाद ग्रस्त व्यक्ति अतीत के व्यामोह से ग्रासित होकर वर्तमान को हीन समझता है । अतः अतित के मोह से मुक्ति पाने का एक ही उपाय है - वर्तमान को श्रेष्ठ

समझना । युग के प्रति हीन भावना रखने से मनुष्य में असंतोष, निराशा आ जाती है । अतित के प्रति प्रेम होने से भी वह अतित को लौटा नहीं सकता , वह अपने भविष्य को और भी बिगाड़ देता है ।

नारद और वशिष्ठ के कहने पर राम ने शम्बूक का वध किया यह राम ने रुढ़ियों की रक्षा पालनार्थ ही किया है, जो कि अत्यंत निंदनीय है । ब्राह्मणों का आदेश राम को राजा होने के बावजूद स्वीकारना पडा क्योंकि अंधविश्वास से भरे राम ने ब्राह्मणों के शब्दप्रामाण्य को मान लिया । उस घटना का कार्य - कारण संबंध राम ने नहीं आजमाया । आज के समाज में भी ऐसे अनेकों शब्दप्रामाण्य एवं ग्रंथप्रामाण्य स्वीकार लिये जाते हैं जो समाज के लिए विघातक हैं, जनता के हित में बाधा डालने वाले हैं ।

निष्कर्ष -

वस्तुतः डॉ . जगदीश गुप्त एक सजग, समर्थ, एवं प्रबुद्ध रचनाकार हैं। उनकी रचना -- धर्मिता के सभी आयामों में युग धर्म और आधुनिकता का मणिकांचन योग हुआ हैं। गुप्त जी ने 'शम्बूक वध ' की रामायण की कथा को लेकर तथा उसमें कुछ काल्पनिक प्रसंगों को जोड़कर प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु बनाई है । इस प्राचीन कथा के माध्यम से कवि ने आधुनिक समस्याओं को उठाया है, साथ ही उनके समाधान भी प्रस्तुत किये हैं । निश्चित रुप से 'शम्बूक ' में प्रतिपक्ष की आवाज को उठाने से वह नयी कविता की बहुचर्चित कृति बन गई है ।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि 'शम्बूक' में कथा पुरानी है, पर उसमें आधुनिक समस्याओं का चित्रण किया है । अपना उद्देश्य स्पष्ट करने के लिए कवि ने रामायण की कथा का आधार लिया है । कवि का यह उद्देश्य कदापि नहीं कि रामायण की 'शम्बूक -वध' कथा को दुहराना । जगदीश गुप्त जी का 'शम्बूक ' आधुनिक राजनीतिक , और सामाजिक समस्याओं का दर्पण है । उन्होंने इस काव्य के माध्यम से निम्नलिखित व्यथाओं को मुखरित किया है --

अ. राजनीतिक व्यथा -

1. समाजव्यवस्था और राजनीति ।
2. जनता और राजनीति ।
3. लोकनायक और राजनीति ।

4. शोषण और राजनीति ।

5. न्याय और राजनीति ।

6. युद्ध और राजनीति ।

आ. **सामाजिक व्यथा**

1. जातिव्यवस्था ।

2. शोषित - वर्ग ।

3. रुढ़ि- परंपरा और - अंधविश्वास ।

कवि ने 'शम्बूक ' के माध्यम से कुछ राजनीतिक व्यथाओं का विवेचन किया है । आज की समाजव्यवस्था वर्ग-सीमित स्वार्थ से ग्रस्त है । अतः शासनकर्ताओं ने सतर्कतासे राज्य चलाना चाहिए विशिष्ट वर्गों के कहने पर कोई निर्णय नहीं लिया जाना चाहिए । यदि ऐसा किया जाय तो आम जनता का शोषण किया जा सकता है । आज लोकनायक तथा उच्च वर्ग सुरक्षित स्थान पर बैठा है, उनमें सत्ता-लिप्सा और स्वार्थपरक मनोवृत्ति दिखाई देती है ।

स्वतंत्रता के समान न्याय भी महत्व-पूर्ण है । अतः आम जनता को न्याय मिलना चाहिए । परंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि आज न्याय सत्य से दूर चल रहा है । यदि न्यायालय ने दूध का दूध और पानी का पानी नहीं कर दिया, तो सामान्य जनता पर अन्याय और उनका शोषण किया जाता है । राजनीतिक लोगों के स्वार्थ के कारण आज विश्व तीसरे विश्व-युद्ध की कगार पर खड़ा है । युद्ध के कारण, उनकी भीषणता और दुष्परिणामों के भी कुछ संकेत कवि ने दिए हैं ।

आज सामाजिक समस्याओं में जातिव्यवस्था, शोषितों की दुर्दशा और रुढि-परंपरा और अंधविश्वास मुख्य हैं । जातिव्यवस्था यह आज के वर्ग-संकीर्ण समाज पर लगा हुआ कलंक है। आज शोषितों में दलित,मजदूर तथा निम्न जाति के लोग ही हैं। आज के वैज्ञानिक युग में समाज रुढि-परंपरा तथा अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हुआ है । इस प्रकार 'शम्बूक' में प्राचीन कथा के माध्यम से अनेक राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया है । अतः'शम्बूक' के संबंध में कहा जा सकता है --

'शम्बूक' की कथा पुरानी है लेकिन उसमें व्यथा नई है ।

संदर्भ सूची

1.	आचर्य विश्वनाथ	-	साहित्यदर्पण	
			आधुनिक हिंदी खंड काव्य - डॉ. एस् तंकमणी अम्मा ।	
			सूर्यप्रकाशन नई सडक, दिल्ली, प्रथम संस्करण,1987 पृ.18	
2.	------------------तदैव ---------------------			पृ.32
3.	डॉ. भगीरथ मिश्र	-	काव्यशास्त्र ।	
			विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।	पृ. 61
4.	डॉ. बाबू गुलाबराय	-	काव्य के रुप ।	
			आत्माराम एन्ड सन्स, नई दिल्ली	पृ.23
5.	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक,	
			कविकथन	पृ.12-13
6.	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक,	पृ.12
7.	------------------तदैव ---------------------			पृ.22
8.	------------------तदैव ---------------------			पृ.28
9.	------------------तदैव ---------------------			पृ.32
10	------------------ तदैव ---------------------			पृ.44
11	------------------ तदैव ---------------------			पृ.48
12	------------------ तदैव ---------------------			पृ.53
13	------------------ तदैव ---------------------			पृ.68
14	------------------ तदैव ---------------------			पृ.71
15	------------------ तदैव ---------------------			पृ.96
16	------------------ तदैव ---------------------			पृ.101
17	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक,	
			कविकथन.	पृ. 7-8
18	डॉ. जगदीश गुप्त	-	शम्बूक,	पृ. 45
19	------------------तदैव ---------------------			पृ. 29
20	------------------ तदैव ---------------------			पृ. 48

21	डॉ. कृष्णचंद्र का निबंध -	संपादक डॉ . महावीरसिंह नयी कविता की प्रबंधचेतना	पृ.145
22	डॉ. प्रमचंन्द विजयवर्गीय -	आधुनिक हिंदी कवियोगा का सामाजिक दर्शन प्रकाशक- बाफना प्रकाशना,जयपुर ।	पृ. 216
23	डॉ. जगदीश गुप्त -	शम्बूक,	पृ.68
24	---------------------तदैव------------------		पृ.53
25	---------------------तदैव------------------		पृ. 49
26	---------------------तदैव------------------		पृ.45
27	डॉ. पी. ए. गवळी -	पेशवे कालीन गुलामगिरी व अस्पृश्यता, द्वितिय आवृते 1983 प्रचार प्रकाशन, कोल्हापूर	पृ. 109
28	डॉ. जगदीश गुप्त -	शम्बूक,	पृ. 101-102
29	---------------------तदैव------------------		पृ. 29
30	---------------------तदैव-------------------		पृ. 12

xxx